आधुनिक साहित्य

Aadhunik Sahitya

ISSN 2277 - 7083

साहित्य, संस्कृति एवं आधुनिक सोच की त्रैमासिकी

UGC Approved Care Listed Journal
वर्ष/Year-11 अंक/Vol.-42 द्विभाषी/Billngual
जुलाई – सितम्बर / July - Sept. 2022

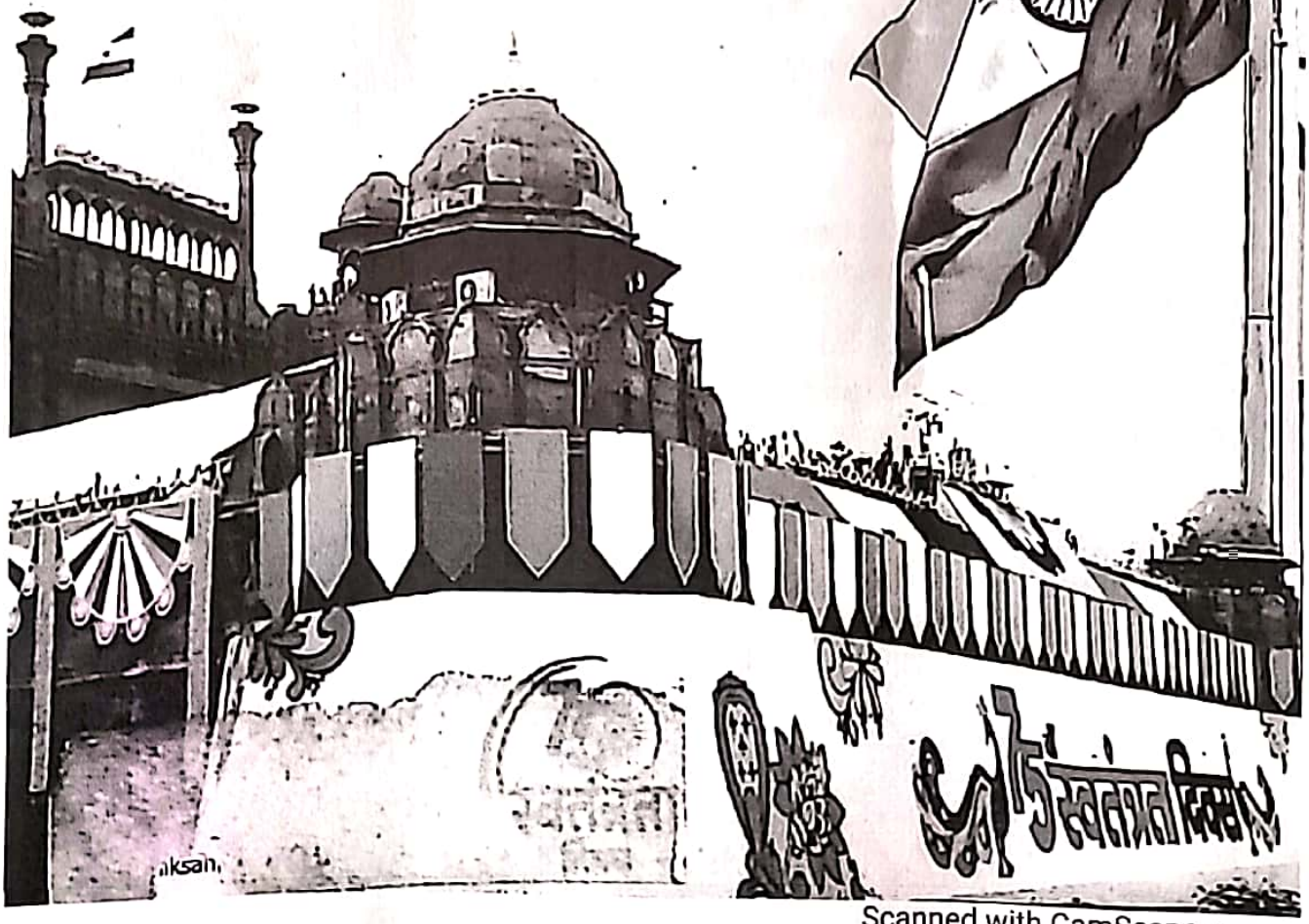

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

UGC Approved Care Listed Journal

आधुनिक साहित्य

साहित्य, संस्कृति एवं आधुनिक सोच की त्रैमासिकी

वर्ष/Year-11 अंक/Vol.-43 जुलाई-सितम्बर 2022/July-Soptombor 2022 द्विभाषी/Billngual

Adhunik Sahitya

संपादक
डॉ. आशीष कंधवे*
Editor
Dr. Ashish Kandhway

संरक्षक प्रो. उमांपति दीक्षित कुमार अविकल मनु	Patron Prof. Umapati Dixit Kumar Avikal Manu
उप संपादक रजनी सेठ	Sub Editor Rajni Seth
प्रबंध संपादक ममता गोयनका	Managing Editor Mamta Goenka
विशेष संवाददाता (अमेरिका) रश्मि शर्मा	Special Correspondent (USA) Rashmi Sharma
संवाददाता (अंग्रेजी) निलांजन बैनर्जी	Correspondent (English) Nilanjan Banerjee

*आशीष कंधवे (मूल नाम आशीष कुमार)

आधुनिक साहित्य में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण संबन्धित लेखकों के हैं जिनसे संपादक, प्रकाशक, मुद्रक एवं पत्रिका से जुड़े किसी भी व्यक्ति का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। सभी विवादों का निपटारा दिल्ली क्षेत्र के अन्तर्गत सीमित है। पत्रिका में सम्पादन से जुड़े सभी पद गैर व्यावसायिक एवं अवैतनिक हैं।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

अनुक्रम

संपादकीय
- डॉ. आशीष कंधवे / भारतीय ज्ञान परंपरा : सार्वभौमिक समरसता और समावेशी संतुलन का आधार / 9

नाट्य-चेतना
- प्रो. ज्ञानतोष कुमार झा / नवजागरण, स्त्री चेतना और रवीन्द्रनाथ टैगोर के नाटक / 16

लोक-चेतना
- प्रो. मंजुला राणा / कबीर की लोक व्याप्ति / 35

इतिहास-चेतना
- डॉ. बिपिन कुमार ठाकुर / संसद भवन में शिलालेख : वर्तमान प्रासंगिकता / 44
- डॉ. प्रशान्त कुमार एवं डॉ. अजीत कुमार राव / स्मृतिकालीन शिक्षा व्यवस्था (मनु एवं याज्ञवल्क्य स्मृति के विशेष संदर्भ में) / 51

समाज-चेतना
- अरुणा त्रिपाठी / 'वैवाहिक दुष्कर्म'-एक गंभीर चिंतन एवं बहुपक्षीय विश्लेषण का विषय / 58
- डॉ. पूजा सिंह / समाज में बढ़ते वृद्धा आश्रम का जिम्मेदार कौन? / 63

भाषा-चेतना
- डॉ. राजेश कुमार शर्मा / आत्मनिर्भर भारत की संकल्पना और राष्ट्रभाषा का प्रश्न / 66

शोध-संसार
- देवश्री सिन्हा / भक्तिकालीन साहित्य की पुनर्व्याख्या : मैनेजर पाण्डेय की आलोचना के संदर्भ में / 72
- अरुण कुमार द्विवेदी / संत अक्षर अनन्य का दार्शनिक चिन्तन / 80
- सरिता कुमारी / जयनंदन की कहानियों में मूल्यबोध / 89
- अंजना कनौजिया / मृदुला गर्ग का नारी-दृष्टिकोण / 95
- डॉ. पौशिया सरकार / स्वानुभूति का साहित्य : दलित साहित्य / 101
- जी भवानी कुमार रजक एवं डॉ. रमेश विश्वक्सेन / ओमप्रकाश वाल्मीकि के साहित्य में दलित चेतना / 107
- बिन्दु इनसेना एवं डॉ. बी.एन. जागृत / हिन्दी व्यंग्य उपन्यास परम्परा में आश्रितों का विद्रोह / 114
- दीपमाला / हिन्दी कविता में गजलों की स्थिति / 120
- मंजू देवी / सुरेश्वर त्रिपाठी की कहानियों में चित्रित ग्रामीण जीवन / 127
- प्रो. प्रदीप श्रीधर एवं चारू अग्रवाल / मृत्युबोध के परिप्रेक्ष्य में तेजेन्द्र शर्मा की प्रतिनिधि कहानियाँ / 132
- डॉ. मीरा निचळे / राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 : मातृभाषा और महात्मा गांधी का दृष्टिकोण / 139

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

- Shilpa Rani / Self: A Comparative Study of Laxminarayan Tripathi's *Me Hijra, Me Laxmi* and Living Smile Vidya's *I am Vidya*.... / 358
- Dr. T.S. Ramesh and P. Yogapriya / Sleuthing and Disability: A Study on the Refashioned Gaze / 364
- Thokchom Somorjit Singh and Dr. Laishram Thambal Singh / Effect of Selected Drills on Sub-maximal Oxygen Consumption.... / 369
- S. Shanmugam and Dr. G. Keerthi / Dominant Tradition and Socio-Cultural factors in Chirta Banerjee Divakaruni's The Mistress of Spices / 375
- S. Rajaprabu and Dr. G. Keerthi / Cultural Conflict in Chetan Bhagat's *2 States: The Story of My Marriage* / 380
- Dr. Ph. Jayalaxmi / Understanding Manipuri Women Writers and the Emerging Issues in their Writings / 384
- Dr. Ramyabrata Chakraborty / A Critical Perspective on the Development of Indian Nationalist Literature / 392
- G. Gokula Nandhini and Dr. T. Alagarasan / Cultural Identity and A Gastropolitical Study in M. G. Vassanji's *No New Land* / 397
- Priyanka and Dr. Anu Shukla / Consequences of Economic Power : A Study of the Selected Novels of Chitra Banerjee Divakaruni / 405
- A. Akthar Parveen and Dr. P. Kumaresan / "Fountain of Emotions in Female Voice"-An Analysis of Chitra Banerjee Divakaruni's.... / 412
- Anuja Koothottil and Dr. Jeevaratnam G / Cross-Linguistic Influence in French phonology acquisition: Learning experiences of Malayalam speaking students in Coimbatore / 417
- Partho Banerjee and Dr. Abhishek Upadhyay / Digital Marketing.... / 425
- Pushkar Singh Bisht and Prof. Sophie Titus / The comparative study among the Cricket and Basketball players on selected motor fitness components in Pithoragarh college students / 432
- V. Senthil Nathan and Dr. N. Ramesh / An Exploration of Generation Clash, Marital Disharmony and Family Conflict in Amit Chaudhuri's.... / 443
- P. Kumar and Dr. K. Dharaniswari / Quietness to Vicens Emergeda New Woman in Manju Kapur's Home / 448
- Vidyasagar Maurya and Dr. Bharti Sharma / Impact of remedial programme on basic mathematics skills of children with learning disabilities / 454
- S. Nandhini and Dr. A. Kayalvizhi / Flat and round characters in Shashi Deshpande's *The Dark Holds No Terrors* / 460
- Deepak Kumar Kashyap and Dr. Anupama Saxena / Women Empowerment through Elected Women Representatives in Panchayati Raj.... / 466

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

Women Empowerment through Elected Women Representatives in Panchayati Raj Institutions

–Deepak Kumar Kashyap
–Dr. Anupama Saxena

For the first time women's names appeared in the electoral rolls in 1923 and in 1926 the first woman member was nominated to the Indian Legislature. Women raised their voices for universal adult suffrage in 1931. In independent India, the constitution guaranteed equality of women in all spheres and left the issue of representation of women in Panchayati Raj Institutions to the State Legislatures.

"If you want to create awareness among the people, then first create awareness among women. When they move forward, the family moves forward, the village and the city move forward, the whole country itself moves forward."

-Pandit Jawaharlal Nehru

Empowerment of women in all spheres and in particular the political sphere is necessary for their advancement and for the foundation of gender equal society. It is central to the goals of equality, development and peace.. The 73rd constitutional amendments act 1992, provided for elective posts for women & 1/3 rd reservation to women in panchayati raj institutions. Its creates opportunities for women to exercise more control over design and provisions of services and the management of resources it may benefits .This is a unique experience in the world of democracy, in which women at the lower level have been found suitable to hold political positions and participate in law making, decision making and governance.

Introduction

Political Empowerment of women starts with the active participation of women in political institutions. The grass-root level democracy entails due importance to initial participation of women in Panchayati Raj Institutions. Political system and decision making process is seen clearly in the changes incorporated in the Panchayati Raj Institution. The objective of bringing improvement in the socio-economic condition of women could be successful only by taking suitable initiatives and measures for empowering them. Empowerment of women will not be possible unless they are provided proper representation in the political

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

UGC-CARE List-Social Sciences ISSN 0974-0074

राधा कमल मुकर्जी : चिन्तन परम्परा

National Peer Reviewed Journal of Social Sciences

वर्ष 25 अंक 1
जनवरी–जून, 2023

समाज विज्ञान विकास संस्थान
बरेली (उ.प्र.)

Scanned with CamScanner

इस अंक में

1.	भारत में प्रत्यक्ष करों का सकल घरेलू उत्पाद पर प्रभाव डॉ.रविन्द्र ब्रह्मे कु. दीपा देवी	1-7
2.	प्रयाग में कल्पवास की परंपरा : एक धार्मिक एवं समाजशास्त्रीय विवेचन सुश्री भाग्यश्री ओझा डॉ. आशीष सक्सेना	8-15
3.	कश्मीर की राजनीति में लवन्य समुदायः एक विश्लेषणात्मक अध्ययन डॉ. वर्नीता रानी	16-23
4.	आसियान देशों में भारतीय सॉफ्ट पॉवर (मृदु शक्ति) को संवर्धित करने वाली पहलों का विश्लेषणात्मक अवलोकन 2014-2022 विभव चन्द्र शर्मा डॉ. विमल कुमार कश्यप	24-33
5.	गुजरात के प्रशिक्षित ईडीपी लाभार्थियों की स्थितिः दक्षिण प्रदेश के दो जिलों का अध्ययन डॉ. अरुण एन. पंड्या नविन कुमार एम. रोहित	34-41
6.	भारत में क्रांतिकारी राष्ट्रवादः उद्भव, विकास और प्रभाव डॉ. भरत लाल मीणा	42-49
7.	पैरेटो की क्रिया-व्यवस्था एवं भारतीय समाजशास्त्र डॉ. मनोज कुमार तोमर	50-55
8.	मेव समुदाय के आर्थिक विकास पर तबलीगी जमात का प्रभाव डॉ. आसीन खाँ डॉ. अनिल कुमार यादव	56-62
9.	क्रान्तिकारी जतिन दास की ब्रिटिश विरोधी गतिविधियों का एक समीक्षात्मक अध्ययन प्रवीन कुमार	63-71
10.	छत्तीसगढ़ की पंचायतों में महिलाओं का प्रतिनिधित्व एवं महिला सशक्तीकरण : एक समीक्षात्मक अध्ययन डॉ. अनुपमा सक्सेना दीपक कुमार कश्यप	72-78
11.	भारत चीन संबंध : संघर्ष के प्रमुख द्विपक्षीय मुद्दे बृजेश चंद्र श्रीवास्तव	79-84
12.	भारतीय समाज में सामाजिक कलंक के रूप में मासिक धर्म : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन प्रतिमा चौरसिया कालिंदी सिंह	85-93
13.	गोदना-प्रिय जनजाति बैगा के गोदना में परिवर्तन श्रीमती सोमेश्वरी कुमारी वर्मा डॉ. हेमलता बोरकर वासनिक	94-98
14.	भारतीय सनातन संस्कृति का विश्लेषण : वैदिक काल से आधुनिक काल डॉ. ज्योति अतुल	99-108

Scanned with CamScanner

राधाकमल मुकर्जी : चिन्तन परम्परा
वर्ष 25 अंक 1, जनवरी-जून 2023
Regd. No. UPHIN/1999/00955 ISSN 0974-0074
UGC-CARE List-Social Sciences

छत्तीसगढ़ की पंचायतों में महिलाओं का प्रतिनिधित्व एवं महिला सशक्तीकरण : एक समीक्षात्मक अध्ययन

□ डॉ. अनुपमा सक्सेना
❖ दीपक कुमार कश्यप

वर्तमान भारत में 73वें संविधान संशोधन लागू हुए लगभग 30 वर्षों से अधिक हो गया है। इस संशोधन में महिलाओं के लिए 33 प्रतिशत आरक्षण का प्रावधान रखा गया था, ताकि ग्रामीण स्तर पर महिलाओं के राजनीतिक प्रतिनिधित्व को बढ़ाया जा सके और महिलाओं का सशक्तीकरण हो सके। परिणामस्वरुप वर्तमान में लाखों महिलाएं पंचायत प्रतिनिधि के रुप में अपनी भूमिका निभा रहीं हैं, जिससे ग्रामीण स्वशासन में महिलाओं की राजनीतिक सहभागिता बढ़ी है और महिला सशक्तीकरण हो रहा है। पंचायती राज के माध्यम से लाखों स्त्रियाँ जो लोकतांत्रिक विकेन्द्रीकरण की प्रक्रिया में भाग ले रहीं हैं वे अंततः हमारी समग्र राजनीति के चरित्र को प्रभावित कर रहीं हैं। पूरे विश्व में प्रजातंत्र की दुनिया में यह एक अनोखा अनुभव है जिसमें निचले स्तर की महिलाएं राजनीतिक पदों पर बैठने तथा कानून बनानें, निर्णय लेने तथा शासन में सहभागिता के उपयुक्त पायी गई हैं और उनके शैक्षणिक, व्यवहारिक तथा सामाजिक आर्थिक स्तर का इस पर कोई प्रभाव नहीं पड़ रहा है। छत्तीसगढ़ में 2008 से महिलाओं का आरक्षण 50 प्रतिशत कर दिया गया है, जिसके परिणाम हमें 2019 में पंचायती राज मंत्रालय के प्रतिवेदन में देखनें को मिलते हैं, जिसमें पंचायतों में महिलाओं का राजनीतिक प्रतिनिधत्व 58.78 प्रतिशत है जो यह दर्शाता है कि महिलाओं का पंचायतों में प्रतिनिधित्व महिलाओं की राजनीतिक सहभागिता को बढ़ाता है जिससे महिला सशक्तीकरण को बढ़ावा मिला। प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य छत्तीसगढ़ की पंचायतों में महिलाओं के राजनीतिक प्रतिनिधित्व से आए महिलाओं की स्थिति में परिवर्तन का अध्ययन करना है एवं यह पता लगाना है, कि महिलाओं के राजनीतिक प्रतिनिधित्व ने किन माध्यमों से महिला सशक्तीकरण को बढ़ावा दिया है।

सूचक शब्द : राजनीतिक प्रतिनिधित्व, महिला सशक्तीकरण, पंचायती राज, छत्तीसगढ़।

महिला सशक्तीकरण से तात्पर्य महिलाओं को पुरुषों के बराबर वैधानिक, मानसिक, राजनीतिक, सामाजिक एवं आर्थिक क्षेत्रों में निर्णय लेने की स्वतंत्रता से है। उनमें इस प्रकार की क्षमता का विकास करना चाहिए, जिसमें वे अपने जीवन का निर्वाह अपने अनुसार कर सकें एवं उनके अंदर आत्मविश्वास और स्वाभिमान जागृत हो। महिला सशक्तीकरण एक बहुआयामी एवं निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है, इसका उद्देश्य एक न्यायपूर्ण एवं सम समाज की स्थापना करना है, क्योंकि लिंगगत समानता को सुशासन की कुंजी कहा जाता है।[1] निर्वाचित निकायों में महिलाओं के लिए सकारात्मक कदमों को समुदाय के भीतर समता के रुप में देखा जाना चाहिए। महिलाओं के आरक्षण के प्रावधान की चर्चा पहली बार 1974 में भारत में "महिलाओं की स्थिति" पर गठित समिति के अंतर्गत चर्चा उठी थी। स्थानीय स्तर पर समिति ने सिफारिश की थी, कि गांवों के स्तर पर महिला परिषदों का गठन किया जाए, इन इकाइयों के गठन का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना था, कि महिलाएं अधिक से अधिक संख्या में राजनीतिक प्रकिया में हिस्सेदारी करें।[2] आज भारत में पंचायती राज व्यवस्था लागू है और स्वशासन की इन बुनियादी इकाइयों में महिलाओं को 33 फीसदी आरक्षण भी प्राप्त है। पंचायतों में महिलाओं को आरक्षण एक नई व्यवस्था है, लेकिन भारत में पंचायती राज व्यवस्था का इतिहास काफी पुराना है। यह एक प्रामाणिक तथ्य है, कि प्राचीन काल से ही भारत में ग्राम सभाएं अस्तित्व में थीं और गांव में रहने वाली सभी जातियों के प्रतिनिधि इस ग्राम सभा के सदस्य हुआ करते थे। बौद्धकाल में भी गांवों में ऐसी संस्थाएं अस्तित्व में थी और इनके प्रतिनिधियों का चुनाव खुली सभा में हुआ करता था। बाद के समय में भारत पर मुसलमान शासकों और अंग्रेजों ने सदियों तक राज किया, लेकिन सैकड़ों सालों की गुलामी भी भारत की ग्राम सभाओं के मूल को नष्ट नहीं कर पायी। आजादी के आंदोलन के समय जब राष्ट्रपिता महात्मा गांधी देशभर का घूम-घूमकर दौरा कर रहे थे, तो उन्होने गांवों की दुर्दशा देखी और वहां पंचायतों की जरुरत

□ प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष, राजनीति विज्ञान विभाग, गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर (छ.ग.)
❖ शोध अध्येता, राजनीति विज्ञान विभाग, गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर (छ.ग.)

Scanned with CamScanner

Vol.: 24 (July–December, 2023)

ISSN No. : 2277-4270
UGC Care Listed Journal

आम्नायिकी

चतुर्विंशोऽङ्कः, जुलाई-दिसम्बर, २०२३
षाण्मासिकी अन्ताराष्ट्रिया मूल्याङ्कितशोधपत्रिका
(विश्वविद्यालयानुदानायोग-नईदिल्लीद्वाराअनुमोदिता)

प्रधानसम्पादकः
प्रोफेसरहरीश्वरदीक्षितः

सहसम्पादकाः
प्रोफेसरपतञ्जलिमिश्रः डॉ० उदयप्रतापभारती, डॉ० पुष्पादीक्षितः,
डॉ० शान्तिलाल सालवी, प्रो० (डॉ.)देवेन्द्रनाथपाण्डेयः,
डॉ० राकेशकुमारमिश्रः, डॉ० आलोकप्रतापसिंहविसेनः

प्रकाशकः
प्रोफेसरहरीश्वरदीक्षितः
वेदविभागः
संस्कृतविद्याधर्मविज्ञानसङ्कायः
काशीहिन्दूविश्वविद्यालयः, वाराणसी-२२१००५

Scanned with CamScanner

Vol.: 24 (July–December 2023) आम्नायिकी ĀMNĀYIKI ISSN No. : 2277 - 4270
UGC Care List No. - 02

विषयानुक्रमणिका

क्रम:	विषय:	पृष्ठ सं०
1.	वैदिकसंहितासु लोकप्रशासनस्य प्रबन्धनस्य चावधारणा डॉ० जीतराम भट्ट:	01-04
2.	वैदिकसंहितासु कायचिकित्सा प्रो० हरीश्वर दीक्षित	05-12
3.	धर्म सूत्रों में विहित श्राद्धकर्म प्रमेन्द्र कुमार मिश्र	13-18
4.	महाकवि माघ के महाकाव्य में विविध शास्त्रीय ज्ञान जगदम्बा प्रसाद उपाध्याय	19-22
5.	छठी शती से बारहवीं शती के संस्कृत रूपकों में .... आशीष कुमार तिवारी	23-29
6.	स्वरार्थ विवेचन रामकेश्वर तिवारी	30-33
7.	चामुण्डराय : व्यक्तित्व एवं कृतित्व डॉ0 आनन्द कुमार जैन	34-37
8.	भारतीय धर्म एवं संस्कृति में "अहिंसा" मनोज मणि त्रिपाठी	38-40
9.	भागवत् पुराण में पर्यावरण चेतना डॉ0 राजेश यादव	41-45
10.	वैदिक वाङ्मय में तकनीकी विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी शशी सिंह	46-49
11.	साहित्य में संदर्भित स्त्री-पुरुष संबंध और वर्चस्व की भावना रजनी सिंह	50-56
12.	स्वाधीनता आन्दोलन एवं हिन्दी पत्रकारिता डॉ0 सुमन सिंह	57-60
13.	मानवाधिकार और जीवन मूल्य डॉ0 विजय लक्ष्मी	61-73
14.	मानवाधिकार संरक्षण : वैश्विक परिदृश्य में डॉ0 मीतू सिंह, डॉ0 रीतू सिंह	74-78
15.	उन्नीसवीं सदी की हिन्दी कविता में किसान विद्रोह का स्वरूप हरि ओम त्रिपाठी	79-85
16.	भाषा चिन्तन का मूल उत्स 'वेद' डॉ0 कु0 शुभ्रा त्रिपाठी	86-91

Scanned with CamScanner

17.	कुरआन की ज्ञान प्रणाली में इस्लाम और सूफ़ीवाद का सम्बन्ध डॉ0 वाहिद नसरू	92-99
18.	उपनिषदों में योग का अनुशीलन डॉ० अनूप कुमार	100-103
19.	स्वास्थ्य सवंर्धन में श्रीमद्भगवद्गीता वर्णित निष्काम कर्मयोग और ध्यान योग की भूमिका साधना देवराही, मनुदेव बन्धु	104-109
20.	किरातार्जुनीयम् महाकाव्य में पुरुषार्थ प्रतिपादन डॉ0 बाबूलाल भीना	110-113
21.	कादम्बरी में भारतीय संस्कृति के श्रेष्ठ स्वरूप की अभिव्यक्ति डॉ0 आशा सिंह रावत	114-118
22.	दक्षिण पूर्वी एशियाई देशों में आयुर्वेद शिवांगी सिंह, आलोक श्रोत्रिय, डॉ0 देवेन्द्र नाथ पाण्डेय	119-126
23.	Impact of Nadishodhana Pranayama on Hemoglobin level, Vital Capacity, and level of Stress of an individual: A systematic review **Deepshikha Thakur, Dr. Subodh Saurabh Singh**	127-133
24.	An Overview of Balrasayana: Mechanism And Effects **Dr. Sristi Pandey, Dr. Kalpana Patni**	134-143
25.	Children's Diet According to Ayurveda and Dietetics **Pooja Tripathi, Dr. Kalpana Patni**	144-152
26.	Evaluation of Prakriti in Children **Dr. Kalpana Patni, Pooja Tripathi**	153-160
27.	The Concept of Justice and Dharma in Cilappatikaram: The Story of Anklet **Dr. Reena Kapoor**	161-170
28.	Effect of Anxiety and Stress among Polycystic ovarian syndrome Married Women **Dr. Gayatri Sahu, Dr. Shyam lata Juyal**	171-179
29.	An Analytical Study of Pradhan Mantri Jan Dhan Yojana in the Context of Financial Inclusion Special Reference to Chhattisgarh **Priyanka Dwivedi, Dr. Anupama Saxena**	180-191
30.	Status, Role and Subversion of Identity: A Critical Study of Munshi Premchand's Nirmala **Dr. Vivek Singh, Rohit Kasaundhan**	192-200
31.	A Meta-Analysis of Variations in Biophysical Parameters of the Human Skin **Ravi Shankar Khatri, Manish Gehlot**	201-205
32.	Effect of Patience on Adjustment Level of Among College Students **Sakshi Agarwal, S. K. Srivastava**	206-212
33.	Clinical Efficacy of Bala Taila : A Review **Manish Gehlot, Ravi Shankar Khatri**	213-222

Scanned with CamScanner

An Analytical Study of Pradhan Mantri Jan Dhan Yojana in the Context of Financial Inclusion Special Reference to Chhattisgarh

Priyanka Dwivedi*, Dr. Anupama Saxena**

Abstract: One of the most crucial components of sustainable economic development is financial inclusion. It has been a very difficult endeavor, yet financial inclusion is the path to India's overall growth. This essay focuses on the history and current state of financial inclusion as well as the numerous initiatives taken by the government, RBI, and other financial institutions to achieve full financial inclusion in India. A complete financial inclusion results in more savings and more affordable funding options, which both directly and indirectly boost the country's economy. The last several years of work using ATMs, debit cards, and mobile banking has yielded some promising results, and technology has also assisted residents in rural and semi-urban areas in their transition to financial inclusion. After eight years of operation, the Pradhan Mantri Jan Dhan Yojana (PMJDY) has been examined in this study report to assess the success of the financial literacy program, public knowledge of PMJDY, its function and challenges, and efforts made in these areas. The effectiveness of financial literacy programs, people understand of PMJDY, their role and obstacles, and initiatives to address these issues have been examined. Additionally, the study emphasizes the necessity of financial inclusion in the state of Chhattisgarh under the scheme as well as the effectiveness of PMJDY's pillars and how it will contribute to the state's ability to benefit from sustainable financial services. It also places the financially excluded at the forefront of financial inclusion initiatives and protects them from the grasp of informal financial services.

Key-words:- *Financial Inclusion, Pradhan Mantri Jan Dhan Yojana, Financial Literacy, Sustainable Development*

Introduction

Since it ensures a sufficient flow of crucial components in the financial system, financial inclusion is regarded as the fundamental idea for the growth of every country. Due to its significance in assisting developing nations to achieve inclusive growth, which emphasizes that financial inclusion and poverty reduction in developing countries have a direct relationship, financial inclusion has become a key issue of discussion in academic study. Apart from this, there is a favorable correlation between financial and economic growth. All people's social and economic growth has been supported through financial inclusion in a sustainable and all-encompassing manner. Financial inclusion is a process through which agreements are made to deliver timely and adequate credit and financial services to the weaker segments of society and low-income groups at a reasonable cost, according to the Rangarajan Committee. Dr. Vijay L. Kelkar, the chairman and chief economist of the Thirteenth Finance Commission, also made an appropriate statement regarding financial inclusion. He explained how the formal financial system can be used

* Research Scholar, Deptt. of Political Science, Guru Ghasidas Vishwavidyalaya, Bilaspur C.G.
** Professor, Deptt. of Political Science, Guru Ghasidas Vishwavidyalaya, Bilaspur C.G.

Scanned with CamScanner